लीफ एरिकसन

लेखन: शेनॉन क्नूडसन

चित्र: मार्क ओल्ड्रॉयड

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

लीफ एरिकसन

लेखन: शेनॉन क्नूडसन

चित्र: मार्क ओल्ड्रॉयड

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

लेखक की टिप्पणी

कई लोग सोचते हैं कि अमरीका पहुँचने वाला पहला यूरोपीय व्यक्ति क्रिस्टोफर कोलम्बस था। कोलम्बस ने 1492 में उत्तरी अमरीका पहुँचने के लिए एटलांटिक महासागर पार किया था। उसके बाद कई अन्य यूरापवासी भी आए। उन्होंने अमरीका में अपनी-अपनी बसावटें बसाईं। अमरीका के मूल निवासियों और एक-दूसरे से युद्ध लड़े। हम कोलम्बस को इसलिए याद करते हैं क्योंकि उसकी यात्रा के कारण ये महत्वपूर्ण बदलाव आए थे। पर कोलम्बस यूरोप से निकलकर अमरीका में कदम रखने वाला पहला व्यक्ति नहीं था।

कोलम्बस से पाँच सौ बरस पहले एक जाँबाज़ नौजवान, लीफ एरिकसन उत्तरी अमरीका की यात्रा पर निकला था। लीफ का जन्म आइसलैण्ड में हुआ था, जो यूरोप के उत्तर में स्थित एक द्वीप है। उसके कुनबे के लोग कुशल नाविक और जहाज़ बनाने वाले थे। वे वाइकिंग कहलाते थे। लीफ वाइकिंग लोगों के बसने के लिए नए इलाके तलाशना चाहता था। सो वह एक खुले जहाज़ में एटलांटिक महासागर के तूफ़ानों का सामना कर अनजान प्रदेश की तलाश में ग्रीनलैण्ड नामक द्वीप से निकला। यह उसकी कहानी है।

वाइकिंग बालक
तकरीबन 985 ईस्वी

छप्प-छपाक!

विशाल लहरें वाइकिंग जहाज़ पर टूटे पड़ रही थीं।

लीफ एरिकसन नाम का एक छोटा लड़का, पानी को बड़े गौर से घूर रहा था।

वह ग्रीनलैण्ड भला कहाँ है, जिसके बारे में पिता ने उसे बताया था।

एक नई ज़िन्दगी की शुरुआत करने लीफ आइसलैण्ड के अपने घर-बार को छोड़ वहीं तो जा रहा था।

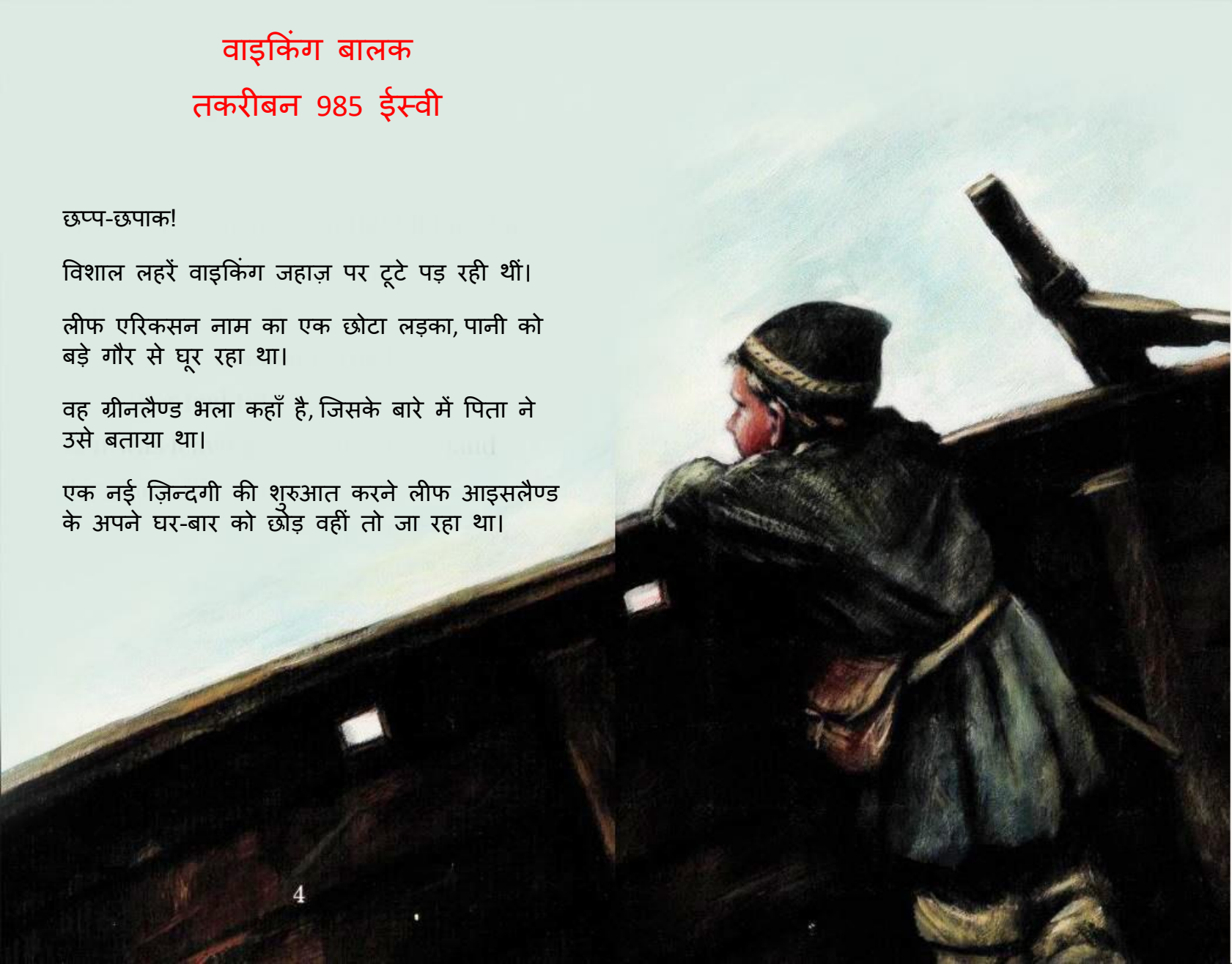

लीफ के पिता एरिक द रेड, यानी सुर्ख एरिक कहलाते थे।

उनके बाल लाल सुर्ख थे और मिज़ाज़ भी तपता लाल था।

तीन साल पहले एरिक ने आइसलैण्ड में दो लोगों की हत्या कर दी थी।

नतीजतन उन्हें आइसलैण्ड से दफ़ा हो जाने का हुक्म मिला था।

एरिक पश्चिम में बसे ग्रीनलैण्ड की ओर निकल पड़ा।

उस इलाके की पूरी खोजबीन की और वहीं बसने का फ़ैसला किया।

985 ईस्वी में एरिक ने कुछ दूसरे वाइकिंग लोगों को इकट्ठा किया, ताकि ग्रीनलैण्ड में एक नई बस्ती बसाई जा सके।

वह अपनी पत्नी और बेटे लीफ को भी साथ लेता आया था।

जब वाइकिंग ग्रीनलैण्ड पहुँचे उन्होंने वहीं अपने लिए घर बनाए।

एरिक उनका महत्वपूर्ण सरदार बन गया।

नई जगह में भोजन तलाशने और तमाम ज़रूरी फ़ैसले लेने में उसने बाशिन्दों की खूब मदद की।

एरिक अक्सर बेहद व्यस्त रहता।

सो लीफ का काफ़ी समय उसका लालन-पालन करने वाले पिता टिरकिर के साथ बीतता। टिरकिर जर्मन मूल का था।

लीफ बड़ा होने लगा। वह भी अपने पिता की ही तरह मेहनती था।

उसने शिकार करना और मछली पकड़ना सीखा।

उसने नाव खेना और दरांती से पकी फ़सल को काटना भी सीखा।

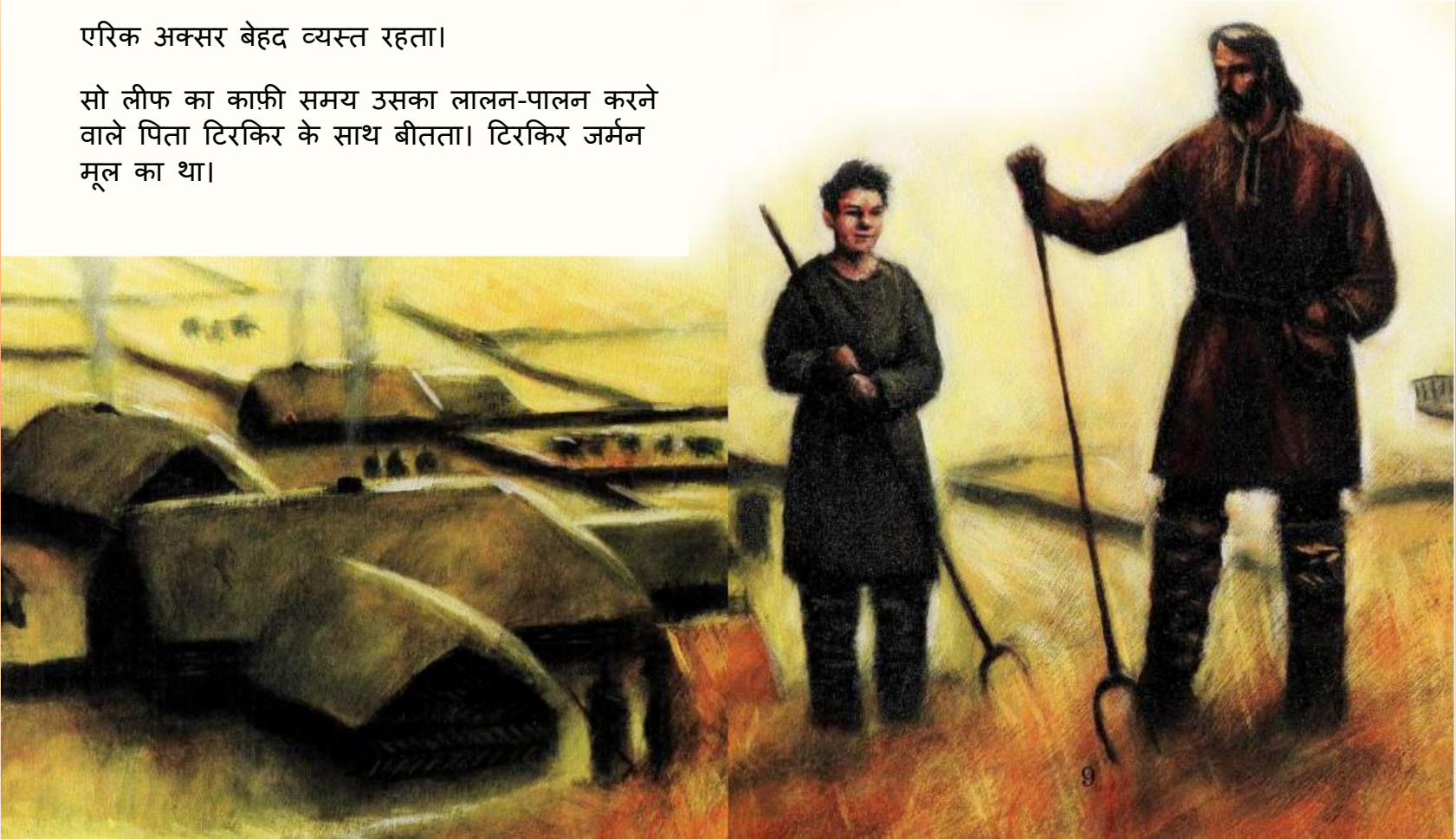

तब एक दिन लीफ ने एक दिलचस्प किस्सा सुना।

किस्सा ब्यार्नी हरयॉल्फसन का था।

सालों पहले क़रीब 986 में ब्यार्नी आइसलैण्ड से ग्रीनलैण्ड के सफ़र पर निकला था।

रास्ते में जहाज़ धुंध और कोहरे से घिर गया।

ज़ाहिर था कि जहाज़ अपने रास्ते से भटक गया।

दिनों-दिन भटकने के बाद ब्यार्नी का जहाज़ ऐसे तीन प्रदेशों में पहुँचा जिन्हें किसी वाइकिंग ने पहले कभी देखा ही न था।

इनमें पहले प्रदेश में पहाड़ और जंगल थे।

अगले में सपाट ज़मीन और पेड़ थे।

तीसरा भी समतल-सपाट था पर उस पर बर्फ़ की विशाल चट्टानें थीं, जिन्हें हिमनदी कहा जाता है।

तब जस-तस ब्यार्नी और उसके साथियों को ग्रीनलैण्ड लौटने का रास्ता मिला।

ब्यार्नी जिन जगहों पर गया था उसका बखान सुन सबको अचरज हुआ।

ब्यार्नी जिन जगहों की बात सबको बता रहा था क्या वे वास्तव में थीं ?

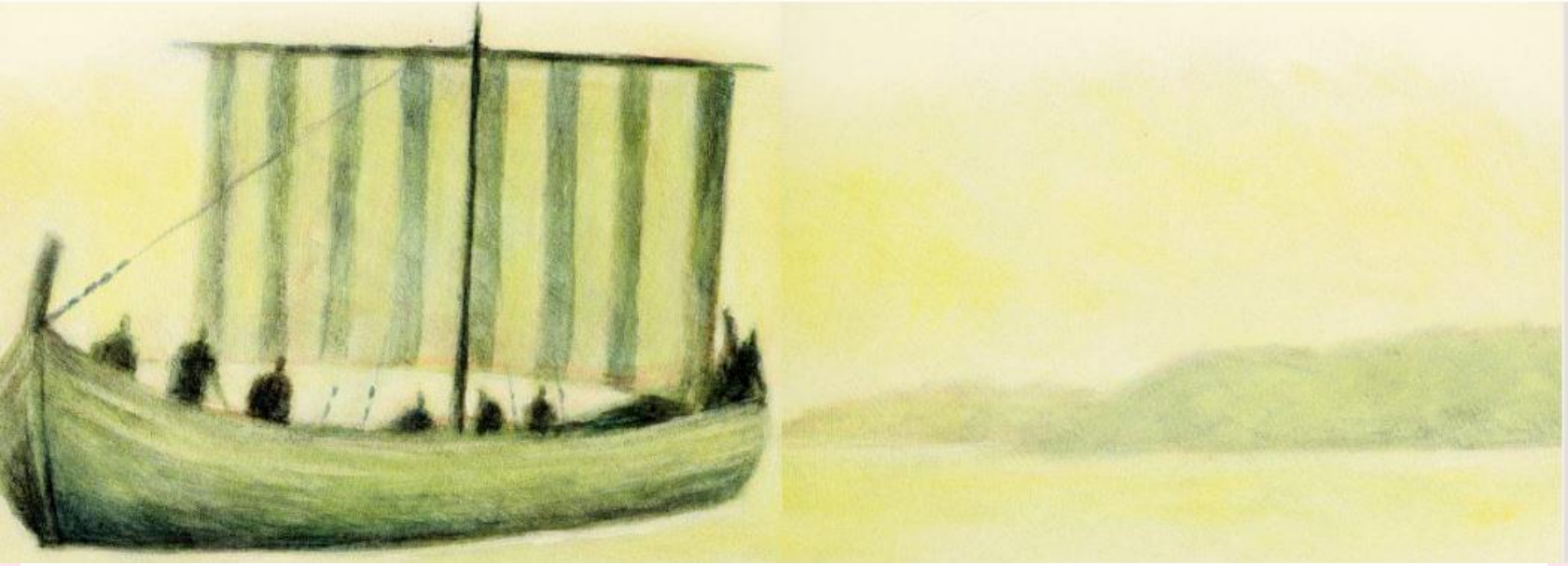

सन् 1000 का साहसिक सफ़र

साल गुज़रते गए।

लीफ अब एक लम्बा, तगड़ा नौजवान बन चुका था।

पर वह ब्यार्नी की खोजों की कहानी नहीं भूला था।

वह सोचता रहता कि पश्चिम में बसे उन रहस्यमय प्रदेशों में जीवन कैसा होता होगा।

बेशक यह सफ़र ख़तरों से भरा होगा।

सागर में उठने वाले तूफ़ान जहाज़ को डुबा सकते थे।

और फिर लोग यह भी तो कहते थे कि सागर पार भयाानक दैत्य रहते हैं!

इधर ग्रीनलैण्ड की आबादी और उसके साथ भीड़-भाड़ बढ़ रही थी।

लोगों को रहने-बसने के लिए नई जगहों की ज़रूरत थी।

पूर्व की ओर के इलाकों में पहले से ही बसावट थी।

ज़ाहिर था कि बसने की नई जगह तलाशने पश्चिम की ओर बढ़ना ही बेहतर था।

सो लीफ ने आख़िर मन पक्का कर ही लिया।

वह उन प्रदेशों को ढूंढेगा जिन्हें ब्यार्नी ने देखा था।

लीफ ने ब्यार्नी का जहाज़ उससे ख़रीद लिया।

ब्यार्नी ने उसे जहाज़ से उन जगहों तक पहुँचने का रास्ता बताया-समझाया।

लीफ ने तब 35 साथियों का एक दल इकट्ठा किया।

इनमें से कुछ पहले ब्यार्नी के साथ सफ़र कर चुके थे।

लीफ के पिता एरिक साथ चलने वाले थे।

उसके पालक-पिता टिरकिर भी, जिन्होंने लीफ को पाल-पोस कर बड़ा किया था।

लीफ ने पहले तो यह सुनिश्चित किया कि जहाज़ पूरी तरह से मज़बूत हो।

उसके पट्टे आपस में सटे हों ताकि जहाज़ में पानी न भरे।

उसका मस्तूल मज़बूत हो और पाल हवा को भर सके ताकि जहाज़ रफ्तार से बढ़े।

जहाज़ के अगले हिस्से में नाविक उसे खेने वाले थे और पिछले हिस्से में भी।

लकड़ी से बनी मज़बूत पतवार उसे सही दिशा में बढ़ाने मे मदद करने वाली थी।

एरिक समझ गया कि एक खोजी के रूप में उसके दिन खत्म हो चुके हैं।

“हमारा साथ यहीं तक का था,” उसने लीफ से कहा।

सागर तट पर बाप और बेटे जुदा हुए।

लीफ को अब पिता के मार्गदर्शन के बिना खुद अपनी राह तलाशनी थी।

लीफ और उसके दल के निकलने का समय आ गया।

पर तब एक हादसा घटा।

जहाज़ में सवार होने आते वक्त एरिक अपने घोड़े से गिर पड़ा।

उसके पैर में काफ़ी चोट आई।

ऐसे में एरिक यह कठिन सफ़र कैसे कर सकता था ?

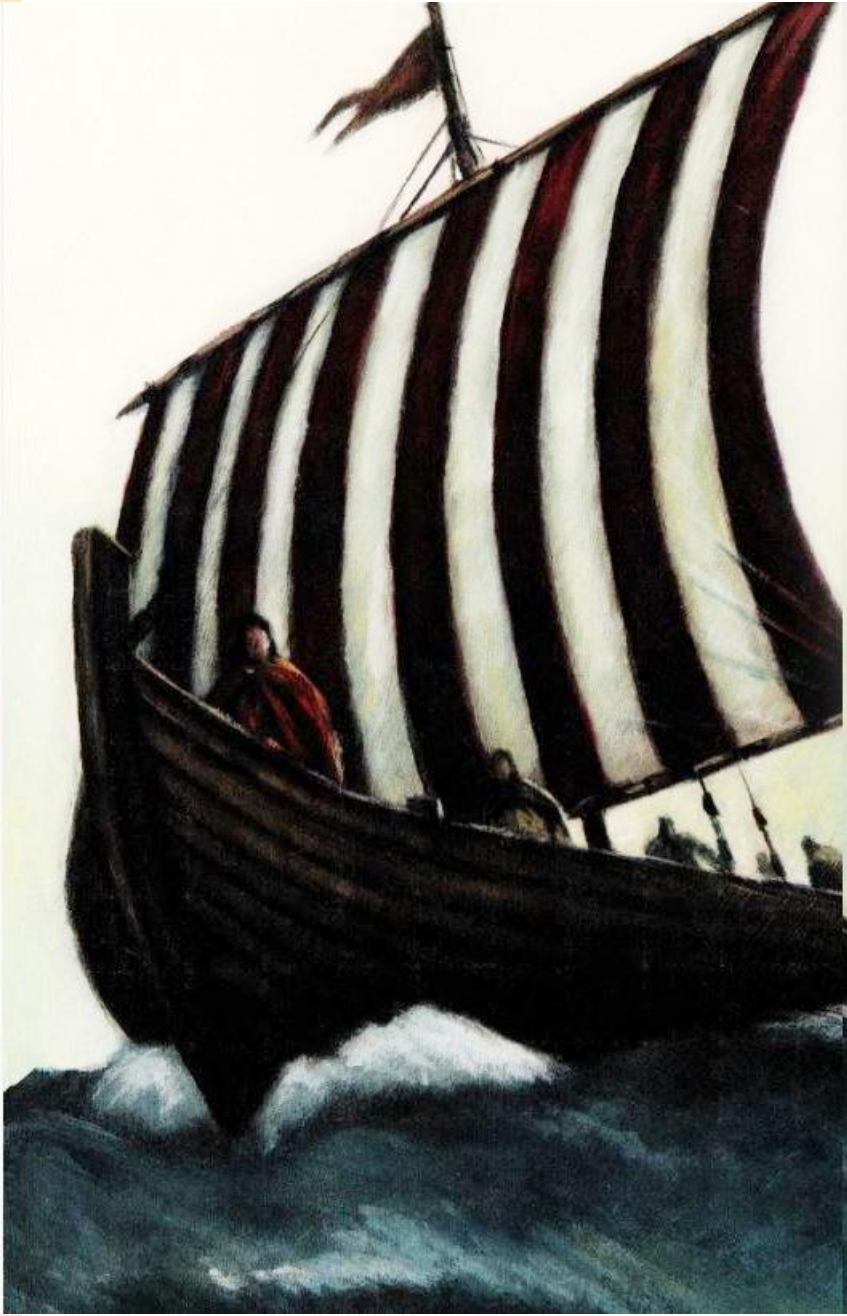

सागर के पार

जहाज़ दल समेत एटलांटिक सागर में बढ़ चला।

कुछ दिनों तक लीफ ग्रीनलैण्ड के तट के किनारे-किनारे बढ़ता रहा।

उसने ज़मीन नज़र से ओझल न होने दी।

उसे डर था कि विशाल सागर में वह खो न जाए।

पर आख़िरकार उसे जहाज़ का रुख ज़मीन से परे अनजान सागर की ओर करना ही पड़ा।

लीफ दिन में सूरज पर नज़र रखता।

और रात में तारों पर।

सूरज और तारे उसे बताते कि जहाज़
किस दिशा में बढ़ रहा है।

जहाज़ रास्ता भटका नहीं।

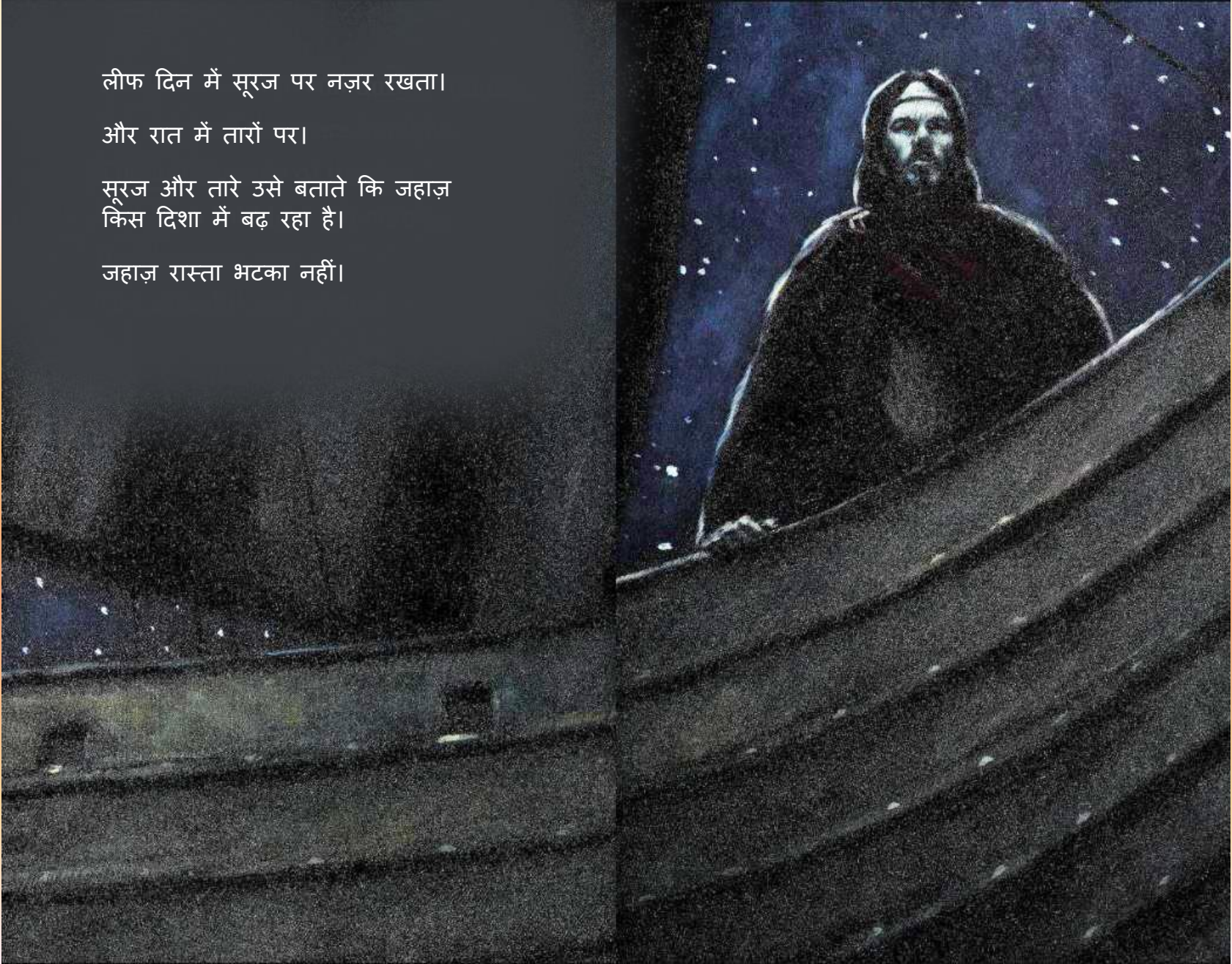

फिर भी जहाज़ से सफ़र करना आसान नहीं था।

हवा और बरसात उन्हें सूखा रहने ही नहीं देते।

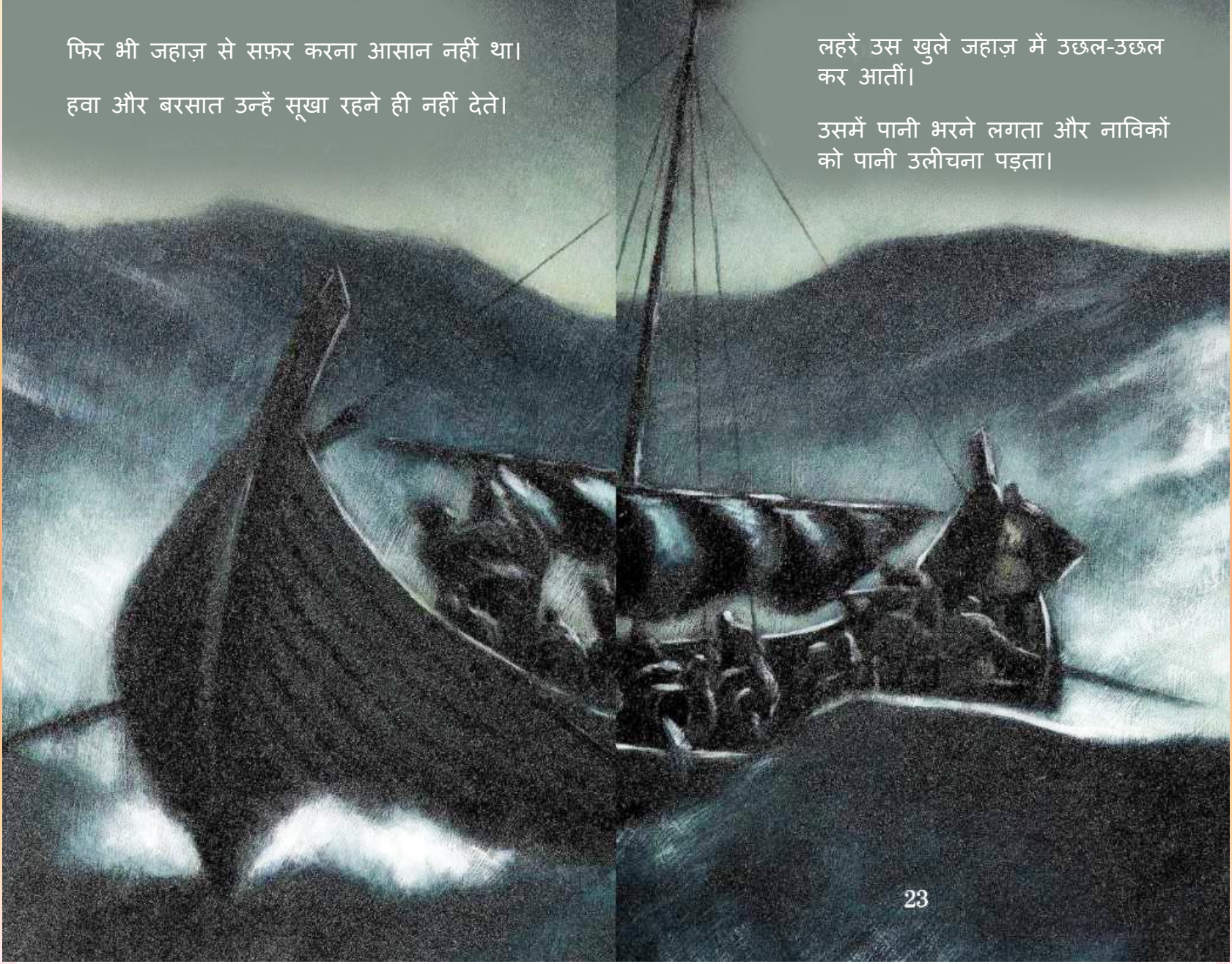

लहरें उस खुले जहाज़ में उछल-उछल कर आतीं।

उसमें पानी भरने लगता और नाविकों को पानी उलीचना पड़ता।

चन्द दिनों बाद नाविकों को दूर धरती नज़र आई।

लीफ ने जहाज़ का लंगर डालने का हुक्म दिया।

अपने कुछ साथियों के साथ लीफ एक छोटी नाव से तट तक पहुँचा।

वह इलाका ब्यार्नी के देखे तीसरे प्रदेश-सा लग रहा था।

एक विशाल सपाट चट्टान-सा।

उस चट्टान का अधिकतर हिस्सा बर्फीली हिम नदियों से अटा था।

वहाँ न पेड़ थे, न पशुओं को खिलाने के लिए कोई घास।

लीफ ने साथियों से कहा कि यह जगह बसने के लिए ठीक नहीं है।

उसने इस प्रदेश को हैलूलैण्ड नाम दिया।

जिसका मतलब होता है पथरीला चट्टानी इलाका।

वे जहाज़ पर लौटे।

तब दक्षिण की दिशा में तब तक बढ़े जब तक उन्हें फिर से ज़मीन नज़र न आ गई।

लीफ को लगा कि यह इलाका ब्यार्नी द्वारा खोजे गए दूसरे प्रदेश जैसा है।

उसका तट बेहद खूबसूरत था और बालू झक्क सफ़ेद।

जहाँ तक नज़र डालो लम्बे-ऊँचे पेड़ों के जंगल नज़र आए।

पर यहाँ भी पशुओं के चरने की घास न थी।

लीफ ने इस जगह को मार्कलैण्ड नाम दिया।

जिसका मतलब जंगल प्रदेश होता है।

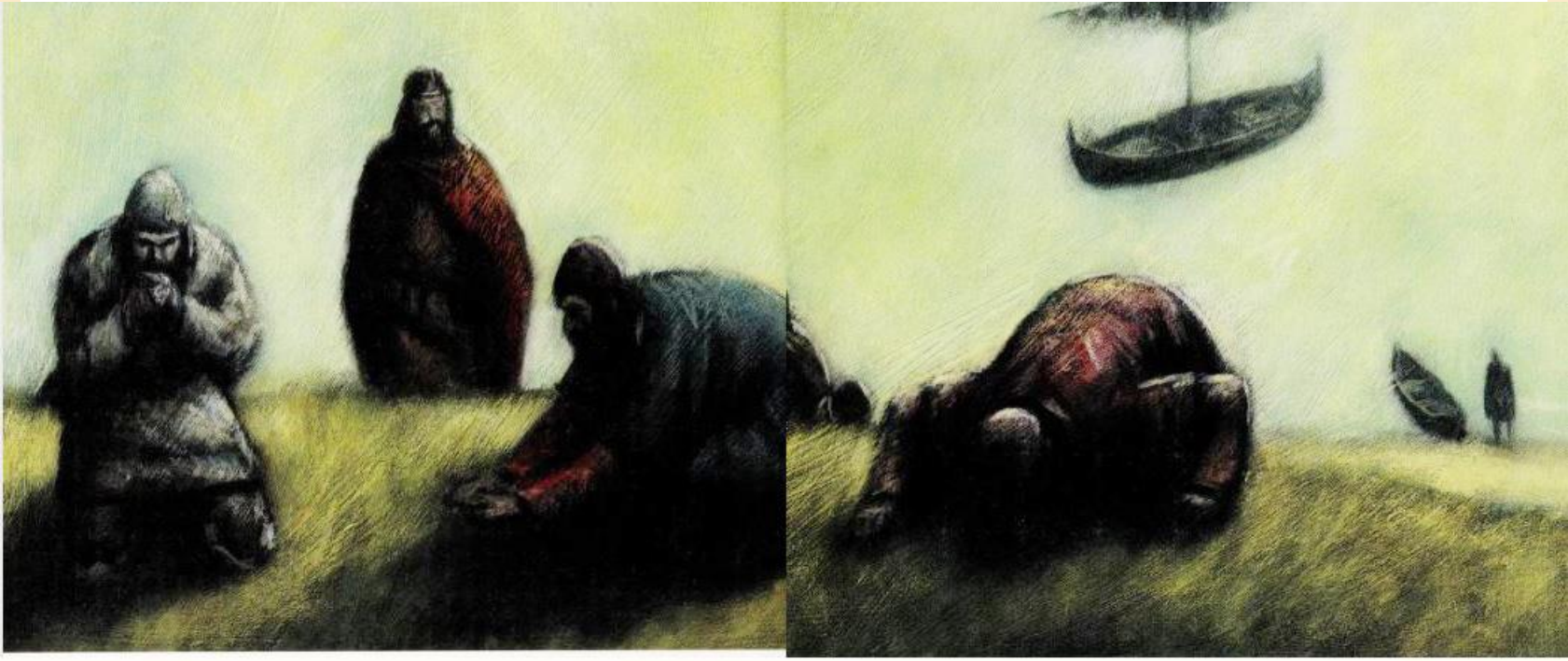

लीफ और उसका खोजी दल फिर से अगले दो दिनों तक जहाज़ में बढ़ता चला।

तब एक सुबह वे एक द्वीप तक आ पहुँचे।

आख़िरकार लीफ को घास दिखी, जिसे वह तलाश रहा था।

घास सुबह की ओस से तर-ब-तर थी।

तट पर उतर सभी ने अंजुरियों में भर-भर कर ओस पी।

ताज़ा पानी पिए दिनों-दिन गुज़र जो चुके थे।

ओस इतनी मीठी थी कि नाविकों को लगा कि ऐसा स्वाद उन्होंने पहले कभी चखा ही नहीं है।

यह घास से लदा मैदानी द्वीप आकार में बहुत छोटा था, उस पर ज़्यादा लोग नहीं रह सकते थे।

सो लीफ और उसके साथी अपनी खोजबीन जारी रखने सागर में आगे बढ़ते चले।

तब लीफ ने जहाज़ को एक नदी की ओर मोड़ा, जो उन्हें एक बड़ी सी झील में ले आई।

झील का पानी साफ़ था, उसमें बड़ी-बड़ी मछलियाँ थीं।

आस-पास का इलाका घासदार था।

यह जगह ठीक से, तसल्ली से खोजबीन करने लायक थी।

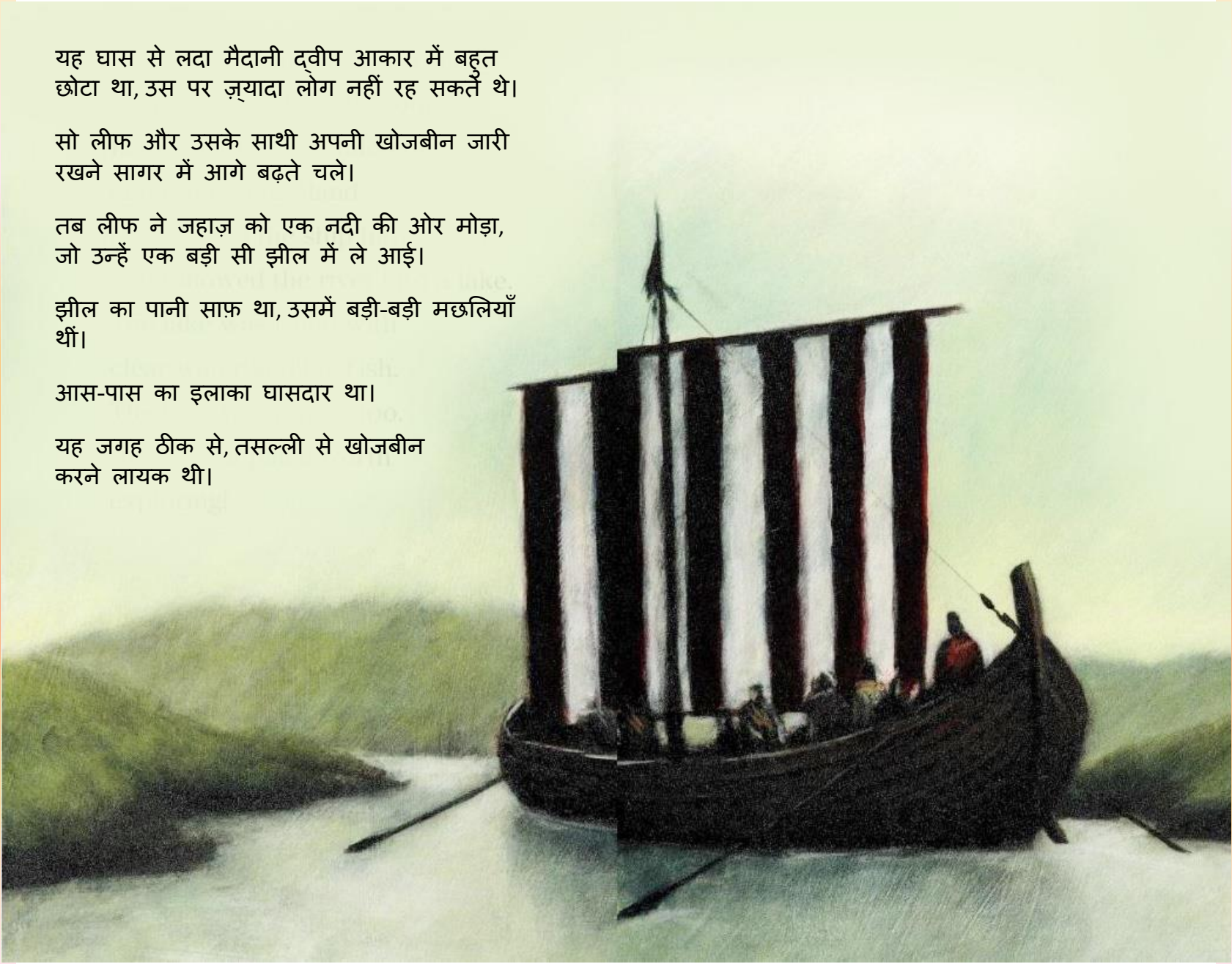

अंगूरों और काठ का प्रदेश

लीफ और उसका दल ठीक से खोजबीन करता उसके पहले उन्हें सिर छिपाने के लिए आसरे की ज़रूरत थी।

सो लीफ और उसके साथी काम में जुट गए।

उन्होंने घासदार माटी के मोटे-मोटे टुकड़े काटे और उन्हें एक पर एक जमा कर दीवारें बनाईं।

तब शाखाओं को आपस में गूंथ कर छतें बनाईं।

इन तैयार बासों को बूथ (कुटिया) कहा जाता था।

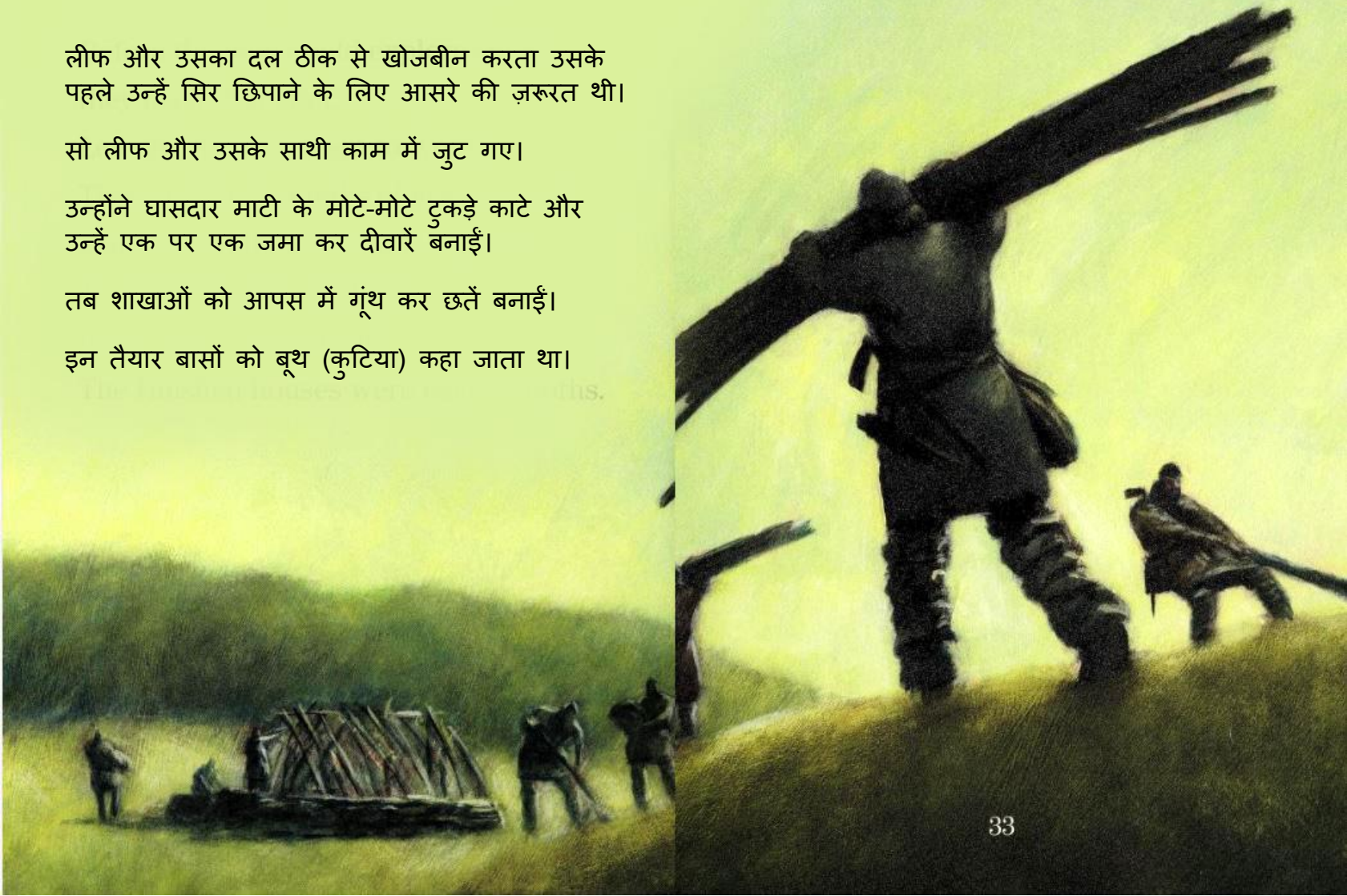

लीफ को इलाका सही लगा।

वहाँ का मौसम भी ग्रीनलैण्ड से ज़्यादा गर्म था।

दिन की रोशनी भी अधिक देर तक रहती थी।

लीफ ने तय किया कि सर्दियाँ वहीं बिताई जानी चाहिए।

इसलिए लीफ ने अपने साथियों के साथ मिलकर बेहतर घर बनाए।

जिनकी दीवारें ज़्यादा मोटी और छतें ज़्यादा मज़बूत हों, और जिनमें अन्दर ही अलाव की जगह हो।

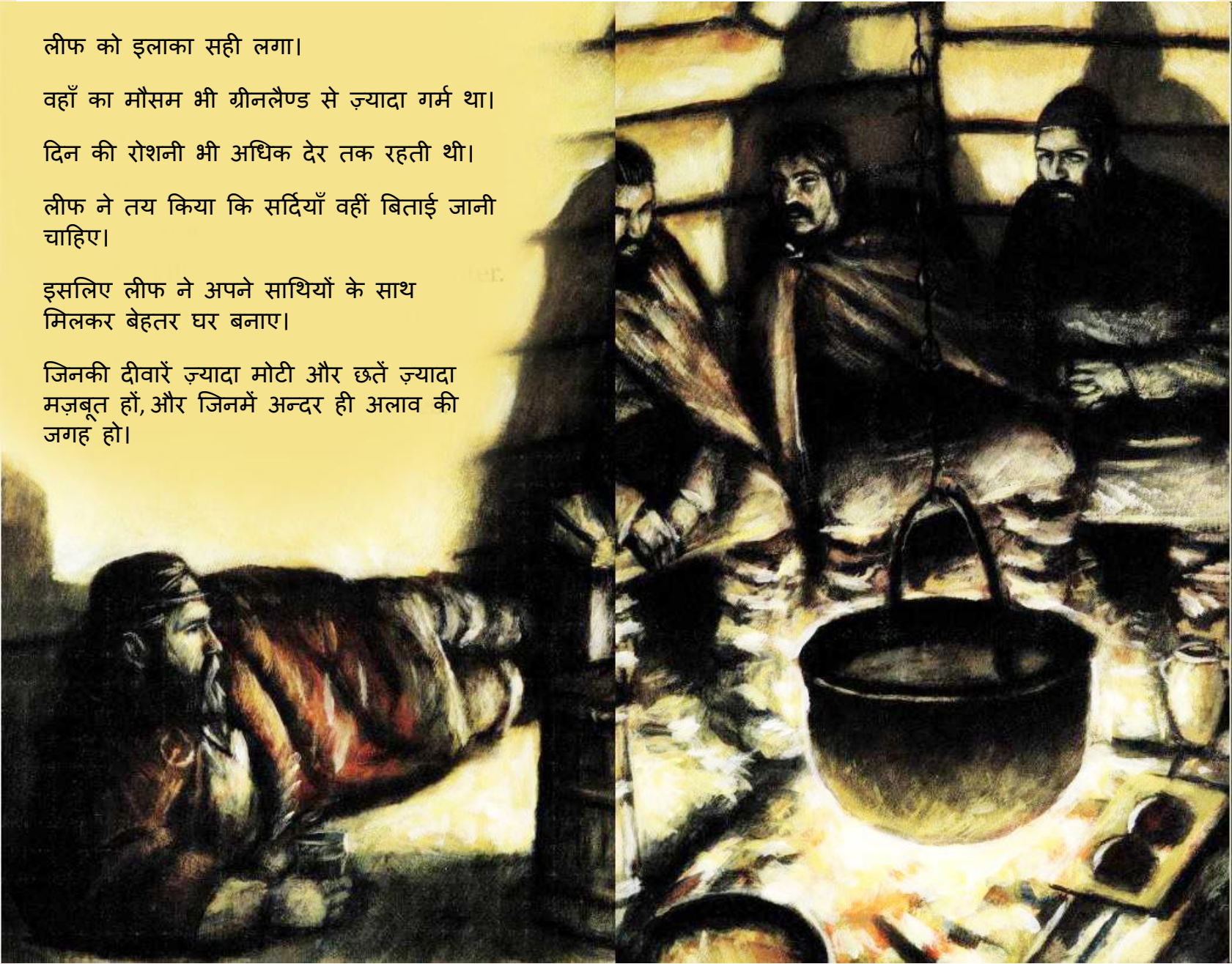

हर दिन लीफ अपने आधे साथियों को इलाके की खोजबीन करने भेजता।

कभी वह भी उनके साथ जाता।

तो कभी वह बाकी साथियों के साथ काम करता।

दिनों-दिन बाद भी खोजियों को इन्सान नज़र नहीं आए।

पर उन्हें खूबसूरत जंगल और शिकार के लिए बेशुमार जानवर मिले।

एक रात उनका एक खोजी वापस नहीं लौटा।

न लौटने वाला खोजी टिरकिर था, लीफ का पालक-पिता।

वह भला कहाँ रह गया होगा?

अगली सुबह लीफ अपने 12 साथियों को ले टिरकिर को ढूंढ़ने निकला।

वे उसे तलाश ही रहे थे कि टिरकिर लौट आया।

वह सही-सलामत था।

दरअसल वह खोजबीन करता अकेले ही ज़्यादा दूर निकल गया था, जहाँ वे पहले कभी गए ही नहीं थे।

उसे दक्षिण दिशा में लताओं पर लटके अंगूर मिले थे।

यह खबर सुखद थी।

अंगूर से शराब बनाई जा सकती थी।

और शराब के बदले पैसा या सामान पाया जा सकता था।

लीफ और उसका दल पूरे जोश से काम पर लगा।

उन्होंने लताएं काटीं और उनसे अंगूर उतारे।

उन्होंने पेड़ भी काटे।

ग्रीनलैण्ड में काठ बड़ी ही मुश्किल से मिलता था।

इन पेड़ों से नावें बनाई जा सकती थीं।

दल ने जहाज़ और छोटी नाव पर लकड़ी और अंगूर लादे।

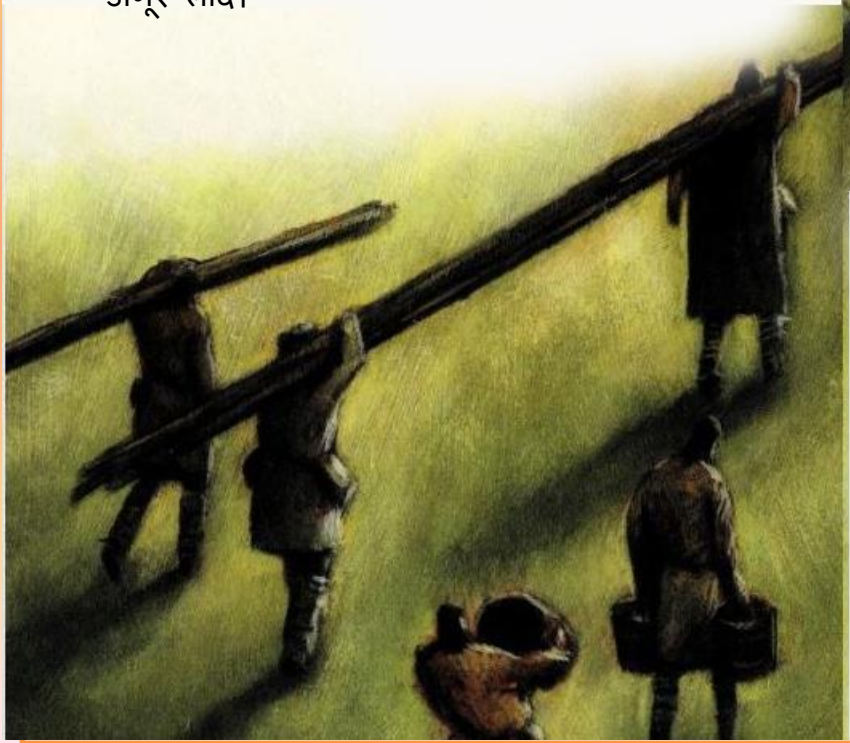

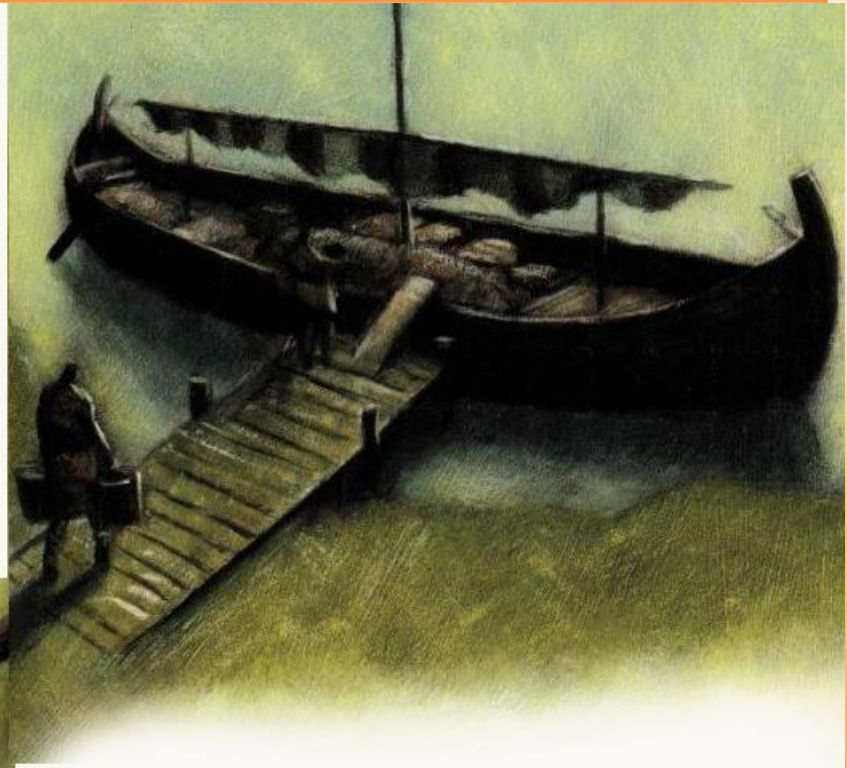

सर्दियों का मौसम बीता, बसन्त आया।

घर वापसी का समय हो चुका था।

दल सागर मार्ग पर निकल पड़ा।

लीफ ने इस प्रदेश का नाम विनलैण्ड रखा।

जिसका मतलब शराब की भूमि होता है।

ख़ुशकिस्मत लीफ

हवा ने जहाज़, लीफ और उसके साथियों को सीधे उनके घर ग्रीनलैण्ड पहुँचा दिया।

वे लगभग पहुँचने ही वाले थे कि लीफ को सामने सागर से ऊपर उठती पथरीली चट्टान दिखी।

ध्यान से देखने पर लीफ को लगा जैसे चट्टान पर कुछ लोग भी खड़े हैं।

और सच में चट्टान पर 15 लोग खड़े चीख रहे थे, हाथ हिला रहे थे।

उनका जहाज़ चट्टान से टकरा कर डूब चुका था।

वे वहीं फंसे हुए थे।

अगर लीफ का जहाज़ वहाँ न आया होता तो वे शर्तिया मारे जाते।

लीफ ने अपने नए मुसाफ़िरों का स्वागत किया।

नए दोस्तों, दल के साथियों, अंगूर और लकड़ी से भरा जहाज़ और नाव लिए लीफ घर को बढ़ा।

आख़िरकार वह अपने पिता एरिक को फिर से देख सका।

उसने सबको विनलैण्ड की कहानी सुनाई।

लोग उसकी यात्रा और कारनामों का किस्सा सुनते थकते ही न थे।

लीफ का नाम और उसकी दास्तान सभी वाइकिंग बसावटों में फैल गई।

उसने दूर-दराज़ का सफ़र जो किया था और नए प्रदेशों और चीज़ों को खोज निकाला था।

तब से लीफ एरिकसन को एक नया नाम दिया गया।

वह ख़ुशकिस्मत लीफ के नाम से जाना जाने लगा।

उपसंहार

लीफ ने जिस प्रदेश को विनलैण्ड का नाम दिया था वहाँ वह कभी वापस नहीं लौटा। लीफ की ग्रीनलैण्ड वापसी के कुछ ही समय बाद उसके पिता एरिक की मौत हो गई। लीफ के कंधों पर ग्रीनलैण्ड में बसे वाइकिंग लोगों की अगुवाई का बोझ आ पड़ा। पर दूसरे वाइकिंग, जिनमें लीफ के भाई और बहन भी शामिल थे, उसके नक्शे कदम पर चले और विनलैण्ड पहुँचे। उन्होंने वहाँ और खोजबीन की। वे उत्तरी अमरीका के मूल निवासियों से भी मिले। ये मूल निवासी अपने वतन को बचाने के लिए लड़े। तकरीबन 1015 में वाइकिंग विनलैण्ड छोड़ गए। बेशक वे लकड़ी की तलाश में कुछ-कुछ समय के लिए आते ज़रूर रहे। पर वे वहाँ बसे नहीं।

इतिहासकार लीफ की कहानी के कुछ हिस्सों के बारे में निश्चित नहीं थे। लीफ ने अपनी यात्राओं का कोई नक्शा तो छोड़ा नहीं था। क्या उसकी कहानी सच्ची थी ? अगर सच्ची थी तो वे स्थान कहाँ थे जिन्हें लीफ ने हैलूलैण्ड, मार्कलैण्ड और विनलैण्ड का नाम दिया था ?

1961 में कनाडा के न्यूफिंडलैण्ड क्षेत्र में वाइकिंग घरों के अवशेष पाए गए। अब ज़्यादातर लोग मानते हैं कि शायद न्यूफिंडलैण्ड ही विनलैण्ड था जहाँ लीफ और उसके साथियों ने सर्दियाँ बिताने के लिए घर बनाए थे। उनका मानना है कि हैलूलैण्ड और मार्कलैण्ड भी न्यूफिंडलैण्ड के और उत्तर में कनाडा के ही हिस्से होंगे। लीफ और उसके साहसिक कारनामों की पूरी कथा हम शायद कभी न जान सकेंगे। पर हम अब यह तो जानते हैं कि उत्तरी अमरीका में किसी यूरोपवासी के कदम पहली बार लीफ की साहसिक यात्रा के कारण ही पड़े थे।